Uni.P.15000x5-3/11 No. of Printed Pages : 02

(09) **SARDAR PATEL UNIVERSITY**

M.A.-PRE (External Examination, 2014 ~~Semester~~

Thurs Day Date 27-03-2014

Session: Morning / ~~Evening~~ Time : 10.30 AM. to 01.30 P.M.

Subject/Course Code : H N 4 0 1 - - - - - /Paper No. 01

Subject/Course Title: PRACHIN AVAM MADHYAKALIN KAVYA

Total ~~Weightage~~/Marks : 100

प्रश्न-1, विद्यापति की काव्यगत विशेषताएँ समझाइए। (20)

अथवा

कबीर के समाज-चिन्तन पर प्रकाश डालिए। (20)

प्रश्न-2, बारहमासा की परंपरा में 'नागमती वियोग-खंड' का महत्त्व स्पष्ट कीजिए। (20)

अथवा

'भ्रमरगीत' के संदर्भ में सूर के वाक्चातुर्य पर विचार कीजिए। (20)

प्रश्न-3, 'अयोध्याकाँड' के मार्मिक प्रसंगों की चर्चा करिए। (20)

अथवा

घनानंद के काव्य-सौंदर्य का निरूपण कीजिए। (20)

प्रश्न-4, टिप्पणी लिखिए— (20)

(अ) अमीर खुसरो अथवा मीराबाई

(ब) रैदास अथवा केशवदास

(क्रु॰ प॰ उ॰)

प्रश्न-5, संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए- (20)

(क) खने-खने नयन कौन अनुसरई।
खने-खने बसन-धूलि तनु भरई॥
खने-खने दसन-छटा छुट हास।
खने-खने अधर आगे गहु बास॥
चँउकि चलए खने-खने चलु मंद।
मनमथ-पाठ पहिल अनुबंध॥
हिरदय-मुकुल हेरि हेरि थोर।
खने आँचर देअ खने होए भोर॥

अथवा

सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।
कबीर गुर गरवा मिल्या, रलि गया आरै नूंण।
जाति-पाँति कुल सब मिटे, नाँव धरौगे कौण।

(ख) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को आराधै ईस॥
इन्द्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस॥
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तो सखा स्यामसुंदर के सकल जोग के ईस॥
सूर हमारै नँदनँदन बिनु, और नहीं जगदीस॥

अथवा

जे पुर गाँव बसहिं मग माही। तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाही॥
केहि सकृती केहि घरी बसाए। धन्य पुन्यमय परम सुहाए॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं॥
पुन्य पुंज मग निकट निवासी। तिन्हहिं सराहहिं सुरपुर बासी॥
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहिं। सीता लखन सहित घनस्यामहिं॥
जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहिं देव सर सरित सराहहिं॥